RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अक्टूबर
31
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

भारत ने ISA असेंबली में प्रमुख वैश्विक सौर पहलों का अनावरण किया / India Unveils Major Global Solar Initiatives at ISA Assembly

संदर्भ:

नई दिल्ली में आयोजित **आठवीं अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस (ISA) असेंबली** के दौरान भारत ने स्वच्छ, समानता-आधारित और सर्कुलर सौर ऊर्जा प्रणालियों की दिशा में वैश्विक परिवर्तन को तेज करने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण वैश्विक पहलों की घोषणा की।

सौर ऊर्जा से जुड़ी प्रमुख पहलें:

1. SUNRISE (Solar Upcycling Network for Recycling, Innovation & Stakeholder Engagement):

- इस पहल उद्देश्य सौर उत्पादों के लिए परिपत्र अर्थव्यवस्था विकसित करना है।
- इसमें पुराने सोलर पैनल और उपकरणों को रीसाइक्लिंग और अपसाइक्लिंग के ज़रिए नए संसाधनों में बदला जाएगा।
- इससे ग्रीन रोजगार और सतत संसाधन उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।

2. One Sun One World One Grid (OSOWOG):

- इस कार्यक्रम का लक्ष्य देशों के बीच पावर ग्रिड इंटरकनेक्शन (Cross-border Power Grid Connections) को मजबूत करना है।
- इसका उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा व्यापार (Clean Energy Trade) को बढ़ावा देना है।
- शुरुआती चरण में पूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, यूरोप और अफ्रीका के बीच कनेक्शन पर प्राथमिकता दी गई है।

3. Global Capability Centre (GCC):

- इसे भारत का "**Solar Silicon Valley**" कहा जा रहा है।
- यह केंद्र अनुसंधान (Research), नवाचार (Innovation) और डिजिटल क्षमता निर्माण (Digital Capacity Building) का हब बनेगा।
- यह हब-एंड-स्पोक मॉडल पर काम करेगा और देशभर के अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थानों को जोड़ेगा।
- इसमें एक AI-आधारित लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म "ISA Academy" भी शामिल होगा।

4. SIDS Procurement Platform:

- इसे विश्व बैंक के साथ मिलकर विकसित किया गया है।
- इसका उद्देश्य Small Island Developing States (SIDS) को सौर उत्पादों की संयुक्त खरीद की सुविधा देना है।
- यह प्लेटफ़ॉर्म वित्तपोषण, क्षमता निर्माण और ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने में मदद करेगा, जिससे द्वीपीय देशों में सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा उपलब्ध हो सके।

5. घरेलू योजनाओं का दोहराव:

- भारत ने यह संकल्प लिया है कि वह अन्य विकासशील देशों, विशेषकर **अफ्रीका और छोटे द्वीपीय देशों**, को अपनी सफल **घरेलू सौर योजनाओं** को अपनाने में मदद करेगा।
- इसमें प्रमुख योजनाएं हैं:
    - **पीएम सूर्य घर – मुफ्त बिजली योजना**
    - **पीएम-कुसुम योजना**

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन:

स्थापना और पृष्ठभूमि:

- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) एक संधि-आधारित अंतर-सरकारी संगठन है।
- इसकी स्थापना भारत और फ्रांस ने 2015 में पेरिस में आयोजित COP21 जलवायु सम्मेलन के दौरान की थी।

उद्देश्य:

- सौर ऊर्जा को सतत और स्वच्छ ऊर्जा समाधान के रूप में बढ़ावा देना।
- ऊर्जा तक समान पहुंच और जलवायु परिवर्तन से निपटने में सौर ऊर्जा की भूमिका को मजबूत करना।
- वर्ष 2030 तक सौर ऊर्जा क्षेत्र में एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के निवेश को प्रोत्साहित करना।

सदस्य देश:

- वर्तमान में 125 देश इस गठबंधन के सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता हैं।
- सदस्य देश मिनी ग्रिड, ग्रामीण विद्युतीकरण और सौर वित्तपोषण जैसे क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाएं चला रहे हैं।

ढांचे में संशोधन:

- प्रारंभ में संगठन केवल विकासशील देशों पर केंद्रित था।
- वर्ष 2020 में इसके फ्रेमवर्क एग्रीमेंट में संशोधन किया गया, जिससे अब संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश ISA में शामिल हो सकते हैं।

मुख्यालय: अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का **मुख्यालय गुरुग्राम (भारत)** में स्थित है।

- यह भारत में स्थापित पहला अंतरराष्ट्रीय संगठन है।

डोनाल्ड ट्रम्प - शी जिनपिंग बैठक / Donald Trump - Xi Jinping Meeting

संदर्भ:

अमेरिकी राष्ट्रपति **डोनाल्ड ट्रंप** और चीनी राष्ट्रपति **शी जिनपिंग** ने दक्षिण कोरिया के बुसान में एक अहम आमने-सामने की बैठक की। यह मुलाकात **एशिया-पैसिफिक इकोनॉमिक कोऑपरेशन (APEC) शिखर सम्मेलन** के दौरान हुई। दोनों नेताओं की यह छह साल बाद पहली प्रत्यक्ष मुलाकात थी, पिछली बार वे 2019 में जापान के ओसाका में हुए G20 शिखर सम्मेलन में मिले थे।

अमेरिका-चीन बैठक: व्यापार युद्ध में अस्थायी विराम, कई अहम समझौते हुए:

प्रमुख समझौते:

1. **टैरिफ में कटौती:** अमेरिका ने चीनी वस्तुओं पर फेंटानिल-संबंधी टैरिफ को 20% से घटाकर 10% करने की घोषणा की। इससे चीन से आने वाले आयात पर कुल अमेरिकी टैरिफ दर 57% से घटकर 47% हो जाएगी।
2. **रेयर अर्थ मिनरल्स (दुर्लभ खनिज):** चीन ने एक साल के लिए अपने नए निर्यात प्रतिबंधों को निलंबित करने पर सहमति दी। ये खनिज उच्च तकनीकी उद्योगों के लिए बेहद आवश्यक हैं।
3. **सोयाबीन खरीद:** शी जिनपिंग ने अमेरिका से बड़ी मात्रा में सोयाबीन और अन्य कृषि उत्पादों की तत्काल खरीद की मंजूरी दी।
4. **फेंटानिल संकट:** चीन ने अमेरिका में फेंटानिल की अवैध तस्करी को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने का वादा किया।
5. **तकनीक और व्यापार:** अमेरिका ने चीनी कंपनियों पर लगाए गए 'Entity List' प्रतिबंधों को एक साल के लिए निलंबित करने पर सहमति दी। दोनों देशों ने भविष्य की वार्ताओं में Nvidia के चिप्स (उन्नत Blackwell चिप को छोड़कर) पर चर्चा करने की योजना बनाई।
6. **भविष्य की मुलाकातें:** ट्रंप ने घोषणा की कि वे अप्रैल 2026 में चीन की यात्रा करेंगे, जबकि शी जिनपिंग भी उसके बाद अमेरिका की यात्रा पर जाएंगे।
7. **वैश्विक मुद्दे:** दोनों नेताओं ने यूक्रेन युद्ध के समाधान पर सहयोग करने की सहमति जताई, हालांकि ताइवान का मुद्दा बैठक में चर्चा का विषय नहीं रहा।

अमेरिका को चीन के साथ रेयर अर्थ समझौते की ज़रूरत क्यों है

अमेरिका आधुनिक तकनीकों, रक्षा प्रणाली, इलेक्ट्रिक वाहनों और इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए जरूरी **रेयर अर्थ खनिजों** की प्रोसेसिंग में चीन पर काफी निर्भर है।

प्रमुख कारण:

1. प्रोसेसिंग में चीन का दबदबा: दुनिया की 90% से अधिक रिफाइनिंग क्षमता चीन के पास है।

2. उद्योगों के लिए अनिवार्य सामग्री: रेयर अर्थ तत्व जैसे नियोडिमियम, प्रासियोडिमियम, डिस्प्रोसियम आदि का उपयोग F-35 फाइटर जेट, मिसाइल सिस्टम, EV मोटर्स और पवन टर्बाइन में होता है। आपूर्ति बाधित होने पर इन उद्योगों को नुकसान पहुँच सकता है।

3. चीन का रणनीतिक दबाव: चीन कई बार निर्यात नियंत्रण लगाकर इन खनिजों को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। इससे अमेरिकी उद्योगों में आपूर्ति की अनिश्चितता बढ़ जाती है।

4. वैकल्पिक व्यवस्था में समय: नई सप्लाई चेन और प्रोसेसिंग प्लांट बनाने में **10 साल तक** लग सकते हैं। इसलिए, चीन के साथ अस्थायी समझौता अमेरिका को **समय और स्थिरता** देता है ताकि वह अपना खुद का नेटवर्क विकसित कर सके।

5. आर्थिक स्थिरता: समझौते से **आपूर्ति और कीमतों में स्थिरता** रहती है, जिससे अमेरिकी उद्योगों को भरोसेमंद उत्पादन का माहौल मिलता है।

Metric tons of rare-earth-oxide equivalents

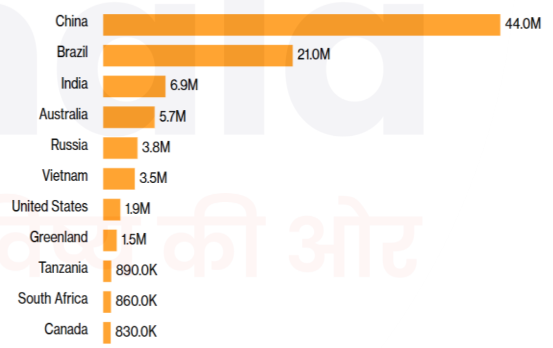

अमेरिका-चीन व्यापार-

कुल द्विपक्षीय व्यापार: ₹48 लाख करोड़

अमेरिका से चीन को निर्यात: ₹12 लाख करोड़

- **प्रमुख निर्यात वस्तुएं:** सेमीकंडक्टर, सोयाबीन, मक्का, विमान, एलएनजी (LNG) और कच्चा तेल

चीन से अमेरिका को निर्यात: ₹36.8 लाख करोड़

- **प्रमुख निर्यात वस्तुएं:** इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, फार्मास्यूटिकल्स, स्मार्टफोन, लैपटॉप और बैटरियां

भारतीय समुद्री क्षेत्र / Indian Maritime Sector

संदर्भ:

प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** ने हाल ही में कहा कि पिछले एक दशक में भारत के **समुद्री क्षेत्र** ने **ऐतिहासिक प्रगति** दर्ज की है। उन्होंने बताया कि इस अवधि में **बंदरगाह क्षमता, दक्षता और अवसंरचना** में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

- उन्होंने मुंबई में आयोजित 'इंडिया मॅरिटाइम वीक 2025' के दौरान वैश्विक निवेशकों को आमंत्रित करते हुए कहा कि भारत का समुद्री क्षेत्र विश्व स्तर पर व्यापार, हरित शिपिंग (Green Shipping) और ब्लू इकोनॉमी (Blue Economy) में नई संभावनाओं के द्वार खोल रहा है।

भारत का समुद्री क्षेत्र (Maritime Sector of India):

- भारत के व्यापार का लगभग 95% वॉल्यूम और 70% मूल्य समुद्री मार्गों के जरिए होता है।
- वित्त वर्ष 2024–25 में देश के प्रमुख बंदरगाहों ने लगभग 855 मिलियन टन कार्गो को संभाला, जो समुद्री व्यापार और बंदरगाह दक्षता में मजबूत वृद्धि दर्शाता है।
- Maritime India Vision 2030 के तहत 150 से अधिक पहलें तय की गई हैं, जिनमें ₹3–3.5 लाख करोड़ के निवेश का अनुमान है।
- इसके अलावा, सरकार ने जहाज निर्माण (shipbuilding) को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में ₹69,725 करोड़ का विशेष पैकेज भी घोषित किया है।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा बताए गए प्रमुख प्रगति बिंदु:

- **बंदरगाह क्षमता में दोगुनी वृद्धि:** भारत की बंदरगाह क्षमता 1,400 MMTPA से बढ़कर 2,762 MMTPA हो गई है।
- **दक्षता में सुधार:** जहाजों के टर्नअराउंड टाइम में बड़ी कमी आई है – यह 93 घंटे से घटकर 48 घंटे रह गया है। अब भारत के प्रमुख बंदरगाह विकासशील देशों में सबसे कुशल (efficient) बंदरगाहों में गिने जाते हैं।
- **आंतरिक जलमार्गों में उछाल:** जलमार्गों पर कार्गो परिवहन में 700% से अधिक वृद्धि हुई है, संचालित जलमार्गों की संख्या 3 से बढ़कर 32 हो गई है।
- **समुद्री कर्मियों की वृद्धि:** भारत के समुद्री कर्मियों की संख्या 1.25 लाख से बढ़कर 3 लाख से अधिक हो गई है, जिससे भारत विश्व के शीर्ष तीन प्रशिक्षित नाविक आपूर्तिकर्ताओं में शामिल हो गया है।
- **वित्तीय स्थिति में सुधार:** प्रमुख बंदरगाहों का वार्षिक शुद्ध अधिशेष ₹1,026 करोड़ से बढ़कर ₹9,352 करोड़ हो गया है – यानी 9 गुना वृद्धि।

प्रमुख परियोजनाएँ और निवेश:

- **विझिंजम पोर्ट:** यह भारत का पहला डीप-वॉटर इंटरनेशनल ट्रांस-शिपमेंट हब बन गया है।
- **वधावन पोर्ट परियोजना:** लगभग **₹**76,000 करोड़ के निवेश से विकसित हो रहा यह बंदरगाह दुनिया के कुछ चुनिंदा डीप-ड्राफ्ट पोर्ट्स में शामिल होगा।
- **समुद्री क्षेत्र के लिए ₹70,000 करोड़ का पैकेज:** सरकार ने ऐसा व्यापक पैकेज मंजूर किया है, जिससे **₹**4.5 लाख करोड़ से अधिक निवेश आकर्षित होने की उम्मीद है, विशेष रूप से जहाज निर्माण क्षेत्र में।
- **आधुनिकीकरण और सुधार:** सौ साल पुराने औपनिवेशिक नौवहन कानूनों को हटाकर Indian Ports Bill, 2025 जैसे आधुनिक और भविष्य उन्मुख कानूनों को लागू किया गया है, जिससे वैश्विक मानकों के अनुरूप व्यापार को सरल बनाया जा सके।

भारत के समुद्री क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ और चुनौतियाँ:

विखंडित शासन और पुराने कानून:

- क्षेत्र अब भी Indian Ports Act, 1908 जैसे पुराने कानूनों से संचालित है।
- नया Indian Ports Bill, 2025 सुधार लाने का प्रयास है, पर अत्यधिक केंद्रीकरण और संघीय संतुलन की कमी को लेकर चिंता है।

गैर-प्रमुख बंदरगाहों का कमजोर प्रदर्शन:

- इन बंदरगाहों में अपर्याप्त अवसंरचना, प्रशिक्षित जनशक्ति और कनेक्टिविटी की कमी है।
- कई बंदरगाह अपनी क्षमता से कम संचालन कर रहे हैं और नियामकीय अड़चनों का सामना कर रहे हैं।

अवसंरचना और लॉजिस्टिक बाधाएँ:

- भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण स्वीकृति और विभागीय समन्वय की कमी से कई परियोजनाएँ देरी में हैं।
- अंतर्देशीय जलमार्ग का विकास बहुत धीमा है।

पर्यावरण और सततता से जुड़ी चिंताएँ:

- ग्रीन टेक्नोलॉजी, कचरा प्रबंधन और उत्सर्जन नियंत्रण का कार्यान्वयन असमान है।
- ग्रीन हाइड्रोजन हब का कार्य अभी शुरुआती चरण में है।

घरेलू शिपिंग क्षमता की कमी:

- भारत की शिपिंग फ्लीट छोटी है, जिससे विदेशी जहाजों पर निर्भरता बढ़ी है।
- कर असमानता और प्रोत्साहन की कमी से जहाज निर्माण प्रभावित है।

कौशल अंतर और समुद्री शिक्षा की कमजोरी:

- प्रशिक्षण संस्थानों को आधुनिक बनाने की जरूरत है।
- पोर्ट संचालन, मरीन इंजीनियरिंग और लॉजिस्टिक्स में कुशल जनशक्ति की कमी है।

चाबहार पोर्ट / Chabahar Port

संदर्भ:

भारत को **ईरान के चाबहार पोर्ट परियोजना** में संचालन के लिए **अमेरिकी प्रतिबंधों से 6 महीने की छूट** दी गई है। यह छूट **29 सितंबर 2025 से प्रभावी** हुई है।

- विदेश मंत्रालय ने बताया कि यह निर्णय भारत के लिए **रणनीतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण** है, क्योंकि चाबहार पोर्ट भारत, ईरान और अफगानिस्तान के बीच **क्षेत्रीय संपर्क (Regional Connectivity)** को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख प्रोजेक्ट है।
- यह छूट भारत को मध्य एशिया तक **सुगम व्यापारिक पहुंच** और **चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC)** के विकल्प के रूप में एक मजबूत रणनीतिक स्थिति प्रदान करती है।

चाबहार बंदरगाह के बारे में:

1. **स्थान (Location):**
   - यह ओमान की खाड़ी (Gulf of Oman) के मुहाने पर स्थित है।
   - ईरान के दक्षिण-पूर्वी सिस्तान-बालूचिस्तान प्रांत में स्थित है।
   - यह चीन-नियंत्रित ग्वादर बंदरगाह (Gwadar Port, पाकिस्तान) के पास स्थित है।
2. **महत्त्व (Importance):**
   - यह ईरान का एकमात्र समुद्री (Oceanic) बंदरगाह है।
   - यह ईरान का पहला गहरे पानी वाला बंदरगाह (Deepwater Port) है, जो उसे वैश्विक समुद्री व्यापार मार्ग (Global Oceanic Trade Route) से जोड़ता है।
3. **रणनीतिक भूमिका (Strategic Role):**
   - यह अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) का हिस्सा है।
   - यह गलियारा हिंद महासागर और फारस की खाड़ी को कैस्पियन सागर से जोड़ता है और फिर रूस के सेंट पीटर्सबर्ग के माध्यम से उत्तरी यूरोप तक जाता है।
4. **विकास (Development):**
   - चाबहार परियोजना पर भारत और ईरान के बीच 2003 में समझौता हुआ था।
   - बंदरगाह का विकास चार चरणों (Phases) में किया जा रहा है।
   - इसमें दो मुख्य बंदरगाह शामिल हैं –
     - शहीद कलांतरी बंदरगाह – जिसका विकास 1980 के दशक में हुआ।
     - शहीद बेहेश्ती बंदरगाह- जिसका विकास वर्तमान में भारत की सहायता से किया जा रहा है।

चाबहार बंदरगाह में भारत की भूमिका

1. **2002 – प्रारंभिक चर्चा:** भारत की भागीदारी पर पहली बार राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) स्तर पर चर्चा हुई।
2. **2003 – वाजपेयी-खातमी समझौता:**
   - ईरान के राष्ट्रपति मोहम्मद खातमी की भारत यात्रा के दौरान नई दिल्ली घोषणा पर हस्ताक्षर हुए।
   - इस घोषणा में चाबहार परियोजना को प्रमुख परियोजनाओं में शामिल किया गया।
3. **धीमी प्रगति:** अमेरिका द्वारा ईरान को "**Axis of Evil**" (इराक और उत्तर कोरिया के साथ) घोषित करने के बाद, भारत-अमेरिका संबंधों के कारण **भारत को परियोजना में धीमा कदम** उठाना पड़ा।
4. **2015 – समझौता ज्ञापन (MoU):**
   - भारत और ईरान ने समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।
   - भारत ने शहीद बेहेश्ती टर्मिनल को विकसित करने की सहमति दी।
5. **2015 के बाद प्रगति:**
   - JCPOA समझौते से अमेरिका-ईरान संबंधों में सुधार आया।
   - इससे चाबहार परियोजना पर ध्यान और गति बढ़ी।
6. **2016 – त्रिपक्षीय समझौता:**
   - भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय परिवहन और ट्रांजिट कॉरिडोर (International Transport and Transit Corridor) के लिए समझौता किया।
   - इस समझौते ने चाबहार बंदरगाह को क्षेत्रीय संपर्क (Regional Connectivity) का केंद्र बनाया।
7. **2018 – भारत का संचालन नियंत्रण:** शहीद बेहेश्ती टर्मिनल का संचालन India Ports Global Limited (IPGL) के माध्यम से भारत के नियंत्रण में आया।

चाबहार बंदरगाह का महत्व

- भारत को **अफगानिस्तान, मध्य एशिया और यूरोप** तक सीधी पहुँच देता है।
- **पाकिस्तान को बायपास** करने वाला वैकल्पिक व्यापार मार्ग।
- **मध्य एशिया में व्यापार और निवेश** के नए अवसर।
- **ग्वादर पोर्ट** के मुकाबले भारत का **सामरिक प्रभाव** बढ़ाता है।
- **ऊर्जा आपूर्ति और कनेक्टिविटी** को मजबूत करता है।
- **INSTC कॉरिडोर** को गति देने वाला प्रमुख बंदरगाह।

Apni Pathshala एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

हरिकेन मेलिसा / Hurricane Melissa

संदर्भ:

हरिकेन **मेलिसा** ने **जमैका** में विनाशकारी लैंडफॉल किया, जिससे क्षेत्र में **भारी वर्षा, समुद्री तूफान (स्टॉर्म सर्ज)** और **संरचनात्मक ढहने** जैसी गंभीर स्थितियाँ उत्पन्न हो गईं।

हरिकेन (Hurricanes) / चक्रवात (Cyclones)

1. **परिचय (Introduction):**
   - इन्हें उनके **स्थान के अनुसार अलग-अलग नामों** से जाना जाता है –
     - **अटलांटिक और पूर्वी प्रशांत** में – Hurricane
     - **पश्चिमी प्रशांत** में – Typhoon
     - **हिन्द महासागर और दक्षिण प्रशांत** में – Cyclone
   - ये पृथ्वी पर **सबसे तीव्र तूफान** होते हैं।
   - वैज्ञानिक रूप से इन्हें उष्णकटिबंधीय चक्रवात कहा जाता है।
2. **नामकरण (Naming):**
   - इन तूफानों के नाम विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) द्वारा बनाए गए छह-वर्षीय घूर्णन सूची से लिए जाते हैं।
   - अगर कोई तूफान भारी तबाही या जनहानि करता है, तो उसका नाम सेवानिवृत्त (Retired) कर दिया जाता है।
3. **निर्माण प्रक्रिया (Formation Process):**
   - चक्रवात गर्म समुद्री जल (Warm Ocean Water) के ऊपर भूमध्य रेखा (Equator) के पास बनते हैं।
   - गर्म और नम हवा ऊपर उठती है, जिससे निम्न दबाव (Low Pressure) का क्षेत्र बनता है।
   - आस-पास की हवा उस स्थान की ओर बहती है, गर्म होती है और ऊपर उठती है – जिससे बादल बनते हैं और पृथ्वी के घूर्णन (Rotation) के कारण प्रणाली घूमने लगती है।
     - **उत्तरी गोलार्ध** में – वामावर्त (Counterclockwise)
     - **दक्षिणी गोलार्ध** में – दक्षिणावर्त (Clockwise)
   - जब तूफान तेज़ होता है, तो बीच में "आंख (Eye)" बनती है, जहाँ मौसम शांत और दबाव न्यूनतम होता है।
4. **गति की श्रेणियाँ (Wind Speed Classification):**
   - हवा की गति 39 मील प्रति घंटा (mph) होने पर इसे Tropical Storm कहा जाता है।
   - **74 mph या उससे अधिक** गति पर यह **Tropical Cyclone / Hurricane** कहलाता है।

पोसाइडन (Poseidon) मिसाइल परीक्षण

संदर्भ:

रूस ने अपने नए **परमाणु-संचालित और परमाणु-सक्षम अंडरवाटर ड्रोन 'पोसाइडन (Poseidon)'** का सफल परीक्षण किया है। मॉस्को ने इसे **"अवरोधन योग्य नहीं"** करार दिया है।

पॉसाइडन ड्रोन परीक्षण – मुख्य तथ्य (Key Details)

1. **परीक्षण की पुष्टि (Test Confirmation):**
   - राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की कि परीक्षण "बहुत सफल" रहा।
   - इस बार न्यूक्लियर पावर यूनिट को सक्रिय किया गया और वह पहली बार कुछ समय तक चली।
   - यह परीक्षण Burevestnik परमाणु-संचालित क्रूज़ मिसाइल के सफल परीक्षण के कुछ दिनों बाद हुआ।
2. **"अवरोधन असंभव" दावा:**
   - पुतिन और रूसी अधिकारियों का दावा है कि वर्तमान कोई भी तकनीक इस हथियार को रोक नहीं सकती।
   - इसका कारण है कि यह बहुत अधिक गहराई और गति पर संचालित हो सकता है, जो सामान्य पनडुब्बियों या टॉरपीडो से कहीं अधिक है।
3. **क्षमताएँ:**
   - Poseidon एक स्वायत्त (Autonomous), परमाणु-सक्षम मानव रहित पानी के नीचे वाहन (UUV) है।
   - यह एक शक्तिशाली परमाणु वारहेड ले जा सकता है।
   - रिपोर्ट्स के अनुसार, इसका उद्देश्य तटीय क्षेत्रों के पास विस्फोट करके विशाल रेडियोधर्मी सुनामी पैदा करना है।
4. **रणनीतिक संदर्भ:**
   - यह परीक्षण यूक्रेन युद्ध और New START परमाणु हथियार संधि की समाप्ति की पृष्ठभूमि में हुआ।
   - पुतिन ने इसे पश्चिम के संभावित पहले हमले (First Strike) के जवाब में "गारंटीकृत प्रतिशोधी हथियार" बताया।
5. **अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया:**
   - लगातार दो परमाणु-संबंधी परीक्षणों से वैश्विक तनाव बढ़ गया है।
   - इसके जवाब में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पेंटागन को तुरंत अमेरिकी परमाणु परीक्षण फिर शुरू करने का निर्देश दिया।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF STOCK MARKET

LEARN HOW TO TRADE

FOUNDATION COURSE OF MUTUAL FUND

INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH

COMBO OFFERS

COURSE FEE

~~₹4000/-~~

OFFER PRICE

₹2800/-

Course Validity 1 YEAR

BBK Baaten Bazar ki

एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..
Baaten Bazar Ki

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE
BBK
EMI AVAILABLE
+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)
FREE
» Long-Term Investing Foundations
» Principles of Value Investing and Stock
» Portfolio Construction Mastery
» Sectoral Investing
» Stock Picking Framework
» Active Portfolio Management Techniques
» Mega Cap vs Mid Cap Strategy
SPECIAL BONUS
COURSE VALIDITY
1 YEAR